© 2009 IJSRST | Volume 1 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

भवभूति की कृतियों में आयुर्वैदिक सन्दर्भ

वीरेन्द्र कुमार मौर्य
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

महाकवि भवभूति विविध शास्त्रों के मर्मज्ञ थे। भारतवर्ष में शास्त्रों का विकास आरम्भ से ही हुआ था। विभिन्न शास्त्रों में से आयुर्वेद का विकास एक उपवेद के रूप में हुआ था। उस शास्त्र में शरीर विज्ञान, भैषज्य विज्ञान, वनस्पति विज्ञान भी आता है। आयुर्वेद का मूल आधार स्वस्थ जीवन था। भारत में आयुर्वेद जन–जन में व्याप्त था। गुणी या श्रेष्ठ होने का अर्थ यह था कि मनुष्य के आरोग्य की बहुत सी बातें वह व्यक्ति जानता था। आज भी भारत के एक सामान्य व्यक्ति के पास आयुर्वेद का प्रभूत ज्ञान रहता है जिससे स्वस्थ जीवन का उद्देश्य फलीभूत हो जाता है।

भवभूति ने अपने रूपकों में आयुर्वेद के तत्त्वों का अनेक स्थलों पर निर्देश किया है। उन्होंने शरीर विज्ञान से सम्बद्ध कतिपय शब्दों, कतिपय वनस्पतियों एवं रोगों की चिकित्सा का उल्लेख किया है। जैसे–महावीरचरितम् के तृतीय अंक में जामदग्न्य कोपपूर्वक कहते हैं कि कुठार की यह धार शिर के कट जाने से धमनियों एवं शिराओं से निकलने वाले रक्त के फेन से विस्तृत और भयंकर बन जाती है तथा पशु के समान तुम्हें खण्ड–खण्ड करके तुम्हारे यकृत्, क्लोम, वक्षोरूह, आन्त्र, स्नायु, सन्धिस्थल, अस्थिखण्ड, कन्धरा, दन्तखण्ड को भी टुकडे–टुकडे कर देगा।[1] इसमें अनेक शास्त्रीय शब्दों का प्रयोग किया गया है।

इसी नाटक के चतुर्थ अंक में इन्द्र को 'वृत्रासुर का अरिष्ट' कहा गया है।[2] अरिष्ट उन लक्षणों को कहते हैं जिनसे मृत्यु निश्चित रूप से होने का अनुमान होता है। वैद्यकशास्त्र को जानने वाले ऐसे रोगी की चिकित्सा नहीं करते अपितु भजन–पूजन का उपदेश देते हैं। कतिपय वैद्य किसी रोग को असाध्य जानकर शल्य चिकित्सा भी करते थे, इसका संकेत भवभूति करते हैं। जामदग्न्य राम की प्रशंसा करते हुए आयुर्वेद का रूपक देते हैं कि मुझे दर्परूपी व्याधि हो गयी थी जिसने मेरी चेतना नष्ट कर दी थी। अकेले होने पर उस व्याधि में अनेक दोष भर गये थे। ब्राह्मणों पर कृपा करने वाले आप राम ने मेरी वह व्याधि नष्ट कर दी थी।[3] इसी प्रसंग में उन्होंने वैद्य द्वारा शल्य चिकित्सा में शस्त्र प्रयोग की चर्चा की है।

महावीरचरितम् के पंचम अंक में शरीर विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग जटायु द्वारा किया गया है जो रावण को चीर–फाडकर रख देने की धमकी देता है।[4] इसमें त्वचा, वसा, प्लीहा, यकृत्, स्नायु, आन्त्र, धमनी आदि शब्दों का प्रयोग है।

मालतीमाधवम् के द्वितीय अंक में मनोरोग की चर्चा है। वह विष के समान सम्पूर्ण शरीर में फैल जाता है। अत्यन्त दुःसह ज्वर के समान प्रत्येक अंग को भीतर और बाहर सर्वत्र पीडित कर देता है। पदलालित्य और सरलता से समन्वित इस पद्य का उदाहरण दिया जाता है जिसमें मालती अपने मानसिक रोग का वर्णन संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर करती है–

'मनोरोगस्तीव्रो विषमिव विसर्पत्यविरतं
प्रमाथी निर्धूमो ज्वलयति विधूतः पावक इव।
हिनस्ति प्रत्यंगज्वर इव गरीयानित इतो
न मां त्रातुं तातः प्रभवति न चाम्बा न भवती।।'[5]

मानसिक रोग को शारीरिक रोग का रूपक देकर माधव आत्मपीडन का संकेत एक पद्य में करता है–'महानार्धिव्याधिर्निरवधिरिदानीं प्रसरतु।'[6] मनोरोग ब्रह्मा के द्वारा उत्पन्न किया जाता है। भवभूति प्रणयव्यापार में इसकी भयावहता पर मालतीमाधवम् और उत्तररामचरितम् दोनों में टिप्पणी करते हैं।[7] चित्तशान्ति के लिए प्राकृतिक शान्त वातावरण का उपयोग प्राचीन भारत में लोकप्रिय रहा है। कामन्दकी मालती एवं माधव दोनों को सरोवर के किनारे उद्यान भेजती है जहाँ का सौन्दर्य दोनों के चित्त को प्रसन्न करेगा।[8] इस प्रसंग में बुद्धरक्षिता कामसूत्र के लेखक के सिद्धान्त को संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर प्रकट करती है। भवभूति इसे अपनी गम्भीर प्रकृति के कारण ऐसी भाषा का प्रयोग करते हैं कि इसमें तृणमात्र भी अश्लीलता नहीं है–'कुसुमसधर्माणो हि योषितः सुकुमारोपक्रमाः। तास्त्वनधिगतविश्वासैः प्रसभमुपक्रम्यमाणाः सम्प्रयोगविद्वेषिण्यो भवन्ति। एवं किल कामसूत्रकाराः मन्त्रयन्ते।'[9]

इस प्रकार भवभूति यहाँ कामसूत्र की साक्षात् चर्चा करते हैं। इसी प्रकार उत्तररामचरितम् के प्रथम अंक में सीता और राम के संयोगश्रृंगार के वर्णन में भी भवभूति कामशास्त्रीय विषय को प्रयुक्त करते हैं।[10] उत्तररामचरितम् में वियोग का वातावरण इतना प्रबल है कि उसमें हृदय की वेदना, हृदय में उत्पन्न व्रण इत्यादि की चर्चा बारम्बार होती है। राम एक पद्य में कहते हैं कि सीता के वियोग से उत्पन्न शोकानल चित्र को देखकर पुनः हृदय में फोडे के समान वेदना उत्पन्न कर रहा है–

'दुःखाग्निर्मनसि पुनर्विपच्यमानो हृन्मर्मव्रण इव वेदनां तनोति।'[11]

तृतीय अंक में यह स्थिति और भी उत्कट हो जाती है। वहाँ पर मनोविज्ञान का भी ईषत् निरूपण प्राप्त होता है। जब हृदय शोक के कारण क्षुब्ध हो जाता है, हृदय के भंग की भी आशंका रहती है, उस समय प्रलाप से ही हृदय को बचाया जा सकता है।[12] अन्यथा हृदय में यदि शोक को दबाया जाय तो ग्रन्थियाँ बन जाती हैं, हृदय भंग हो सकता है। इस प्रकार शोक के अपसारण की यह चिकित्सा है। इस रूपक के पंचम अंक में वनस्पति विज्ञान का परिचय प्राप्त होता है। सुमन्त्र लव को देखकर उनके रामपुत्र होने की सम्भावना तो करते हैं किन्तु पुनः कहते हैं कि पुत्ररूपी मनोरथ का जो मूलकारण (सीतारूप) था, वह तो भाग्य के द्वारा पहले ही छिन लिया गया। जब उगती हुई लता को ही काट दिया गया हो तब उसमें पुष्प–फल लगने की सम्भावना कहाँ रह जाती है–

'मनोरथं यद्बीजं तद्दैवेनादितो हृतम्। लतायां पूर्वलूनायां प्रसवस्योद्भवः कुतः।।'[13]

आयुर्वेद की भैषज्य–निर्माण–प्रक्रिया का एक उत्कृष्ट उपमान भवभूति ने राम के करुण रस को स्पष्ट करने के लिए उत्तररामचरितम् के तृतीय अंक के आरम्भ में दिया है। राम का करुण रस अर्थात् शोक उनकी गम्भीरता के कारण प्रकाशित नहीं होता और भीतर ही भीतर छिपी हुई गाढी वेदना से युक्त है। यह पुटपाक के समान है। 'पुटपाक' आयुर्वेद का पारिभाषिक शब्द है। रसायनों और भस्मों के निर्माण में इस विधि का उपयोग किया जाता है। इसकी विधि है–दो मिट्टी के सम्पुटों को एक दूसरे के ऊपर रखकर कपडे और

मिट्टी से मजबूती से बाँध दिया जाता है और उसको आग में पकाया जाता है। अन्दर ही अन्दर वह धातु जलकर भस्म या रसायन के रूप में अत्यन्त गुणकारी हो जाती है। इस विधि को 'पुटपाक' कहते हैं।[14]

भवभूति ने पुटपाक के समान ही 'तुषाग्निपाक' की भी चर्चा की है। तुषाग्नि मन्द–मन्द गति से जलती है किन्तु उसका ताप बहुत होता है। उसमें रखी हुई वस्तु तत्काल जलकर भस्म नहीं होती अपितु धीरे–धीरे पकती रहती है। सीता के वियोग में जब राम सोचने लगते हैं तब उनका हृदय तुषाग्नि में जलता सा प्रतीत होता है।

इससे यह सिद्ध होता है कि भवभूति आयुर्वेद, ओषधि विज्ञान, पाक प्रक्रिया, वनस्पति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि विषयों के ज्ञाता हैं।

संदर्भ–ग्रंथ–सूची

1–महावीरचरितम्–3 / 32
2–महावीरचरितम्–4 / 18
3–महावीरचरितम्–4 / 22
4–महावीरचरितम्–5 / 19
5–मालतीमाधवम्–2 / 1
6–मालतीमाधवम्–4 / 3
7–मालतीमाधवम्–4 / 7, उत्तररामचरितम्–5 / 15
8–मालतीमाधवम्–6 / 19
9–मालतीमाधवम्–अडक 7 का आरम्भ, बुद्धरक्षिता का संवाद, पृष्ठ–261
10–उत्तररामचरितम्–1 / 26, 27
11–उत्तररामचरितम्–1 / 30
12–'पूरोत्पीडे तटाकस्य परीवाहः प्रतिक्रिया।
शोकक्षोभे च हृदयं प्रलापैरेव धार्यते।।' उत्तररामचरितम्–3 / 29
13–उत्तररामचरितम्–5 / 20
14–'अनिर्भिन्नो गभीरत्वादन्तर्गूढघनव्यथः।
पुटपाकप्रतीकाशो रामस्य करुणो रसः।।' उत्तररामचरितम्–3 / 1